भवभूति रचित उत्तररामचरित में सौंदर्य तत्व

*डॉ. हंसराज शर्मा

भारतीय साहित्य में सौन्दर्य का विशेष महत्व रहता है जिसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन होता रहा है। सौन्दर्य को रमणीयता, शोभा, चमत्कार आदि विभिन्न नामों से जाना जाता है। संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में भवभूति को विशेष ख्याति प्राप्त हुई है। इन्होंने अपने ग्रन्थ 'उत्तररामचरित' में कर्तव्य–अकर्तव्य की शिक्षा देते हुए लोक व्यवहारादि प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किये हैं। उत्तर रामचरित के द्वारा भवभूति को विशेष ख्याति प्राप्त हुई जिससे वे स्तुत्य बन गये।

महाकवि भवभूति की सौन्दर्यदर्शिनी दृष्टि काव्य के उस क्षेत्र तक पहुँच गयी है, जहाँ तक की सूर्य का प्रकाश भी नहीं पहुँच सका।

भवभूति एक उच्च कोटि के नाटककार होने के साथ ही उच्च कोटि के महाकवि भी हैं। उनका हृदय कवि की मनोरम कल्पनाओं और सुकुमार भावनाओं से युक्त है। वे उत्तररामचरित में अनेक प्रसंगों में कथा के प्रवाह की चिन्ता न करके किसी भी सुन्दर भावों का सांगोपांग वर्णन करते हैं। अत एव कतिपय आलोचकों ने उन्हे सफल नाटककार के स्थान पर सफल महाकवि कहा है। भवभूति में महाकवि के सभी गण पूर्ण रूप से हैं। वे सूक्ष्म प्रकृति–निरीक्षक हैं। उनका भाव और भाषा पर असाधारण अधिकार है। वे सरल से सरल और कठिन से कठिन भावों को स्पष्ट भाषा में वर्णन कर सकते हैं। उनमें असाधारण पाण्डित्य और वैदग्ध्य है। उनके नाटकों में प्रौढ़ता, भावों में उत्कर्ष और अर्थगौरव इन तीनों गुणों का सुन्दर समन्वय है।

भवभूति प्रकृति के साथ तादात्म्य का अनुभव करते हुए अन्तः प्रकृति और वाह्य प्रकृति में समन्वय स्थापित करते हैं। यथा पृथ्वी और गंगा श्री राम के द्वारा सीता परित्याग स उतनी ही दुःखी हैं. जितना कोई सामान्य सहृदय व्यक्ति दुःखी होता है। इतना ही नहीं वनदेवता वासन्ती सीता परित्याग से अत्यधिक दुःखी हो जाती है और परित्याग के लिए वह राम को उपालम्भ देती है

'अयि कठोर! यशः किल ते प्रियं

किमयशो ननु घोरमतः परम्।

किमभवद् विपिने हरिणीदृशः

कथय नाथ! कथं बत मन्यसे।।

तमसा मुरला और गोदावरी नदियाँ राम की सुरक्षा के लिए उतना ही दत्तचित्त है जितना कोई एक सेवक दत्तचित्त होता है। राम पंचवटी के वृक्षों और मृगों को अपना बन्धु बताते हैं। सीता द्वारा पाला गया मोर सीता को माता

समझता है और सीता का स्मरण करता है। सीता मृग, पक्षियों और वृक्षों को पुत्रवत् मानकर पालती थीं। इनके प्रति सीता का स्नेह पुत्रवत् था इस प्रकार भवभूति अपने काव्य में अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का समन्वय स्थापित किये हैं।

भवभूति अपने काव्य उत्तररामचरित में सौन्दर्य और प्रेम का अनुपम वर्णन किया है। इतना ही नहीं भवभूति शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा आन्तरिक सौन्दर्य को अधिक महत्व देते हैं और वे कहते हैं कि–

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्ग न च वयः।

गुणों को सर्वोत्तम आदर–सम्मान का स्थान माना जाता है। वे प्रेम को अकारण और नैसर्गिक मानते हैं। उनका कथन है कि प्रेम आन्तरिक कारणों से उत्पन्न होता है और प्रेम को अकारण मानते हुए संसार का एक पवित्र बन्धन मानते हैं तथा प्रेम को ही संसार की स्थिति का कारण मानते हैं। भवभूति दाम्पत्य प्रेम का अत्युत्तम वर्णन करते हैं और दाम्पत्य प्रेम को जीवन का सार बताया है। वे सीता को गृहलक्ष्मी और अमत की शलाका बताते हैं। यहीं तक नहीं पत्नी पति के लिए अमृत धारा है–यहाँ तक कह देते है।

भवभूति प्रकृति वर्णन में दक्ष है। इन्होंने प्रकृति को उसी सूक्ष्मता सेन – प्रकृति के सुकुमार पक्ष के साथ–साथ उसके कठोर पक्ष, उग्र और रौद्र पक्ष कोही प्रेमपूर्वक देखा। इनकी भाषा जितनी सफलता के साथ प्रकृति के सुकुमार पक्ष का वर्णन करती उससे अधिक रौद्र भाषा में प्रकृति के कठोर पक्ष का भी वर्णन करती हैं। वे पनि के साथ तादात्म्य प्रेम का अनुभव करते हैं। वे पशु, पक्षी और वृक्षों तक से प्रेम करते है। फलतः पशु–पक्षी उनके हर्ष में हर्षित तथा दुःख में दुःखित होते हैं। इन्होंने प्रकृति को अलम्बन के रूप में लिया है।

प्रकृति के सुकुमार पक्ष के रूप में–

पुरा यत्र स्त्रोतः पुलिनमधुना तत्र सरितां
विपर्यास पातो घनविरलभावरू क्षितिरूहाम्।
बहोर्दष्ट कालादपरमिव मन्ये वनमिदं
निवेशः शैलानां तदिदमिति बुद्धिं द्रढयति ॥

प्रकृति से तादात्म्य प्रेम पक्ष के रूप में

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे
यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम्।
एतानि तानि बहुकन्दरनिर्झराणि
गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि ॥

तृतीय अंक में भवभूति का प्रकृति चित्रण पराकाष्ठा पर पहुँच जाता है। इस अंक में कवि ने प्रकृति का अद्‌भुत रूप मे मानवीकरण करके प्रस्तुत किया है। आश्चर्य की बात यह है कि सीता देवी भागीरथी के पवित्र जल में अपने पुत्रो को जन्म देती हैं। वे स्वयं ही दोनों पुत्रों को स्तन्यत्याग के पश्चात् महर्षि वाल्मीकि को सौंपती हैं। अतः इस अंक में प्रकृति का अद्‌भुत वर्णन देखने को मिलता है।

भवभूति अपने उत्तररामचरित में यथा स्थान अलौकिक तत्वों का भी वर्णन करते हैं। कोई अलौकिक देवता महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में लव–कुश को पोषणार्थ पहुँचा देता है। उत्तररामचरित के द्वितीय अंक में किसी ब्राह्मण बालक की अकाल मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु का कारण शम्बूक नामक एक शूद्र का तपस्या करना है। तभी सहसा अचानक आकाशवाणी हुई–कि राम तपस्या करते हुए शूद्र का वध करके इस ब्राह्मण बालक को जीवित करो। राम दण्डक वन में जाकर शूद्र तपस्वी शम्बूक का वध करते हैं और वह ब्राह्मण बालक जीवित हो जाता है। पहले जैसा माना जाता था कि राजा के दोष के बिना प्रजा की अकाल मृत्यु नहीं होती थी। इसी प्रकार भगवान अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा ने श्रेष्ठ गोदावरी नदी के पास तमसा द्वारा सन्देश भेजवाती है कि सीता परित्याग के कारण राम अत्यन्त दुरूखी हैं। अतः तुम उनकी सुरक्षा करना। परित्याग रूपी दुःख के कारण राम–सीता दोनों दुःखित रहते हैं। इस दुःख के कारण सीता जब मूर्छित हो जाती है तो उसे गंगा और पृथ्वी बचाती हैं। पृथ्वी इस घटना से दुःखित होकर राम के ऊपर क्रोध करती हैं। तब गंगा पृथ्वी को समझाती हैं कि वह राम के ऊपर क्रोध न करें। क्योंकि राम सीता को पवित्र मानते हैं तथा उसके पातिव्रत्य धर्म को सर्वदा निर्मल मानते हैं परन्तु सीता के विषय में फैला हुआ लोकापवाद उन्हें परित्याग करने के लिए विवश करता है। क्योंकि लोगों को सीता की अग्निपरीक्षा पर अविश्वास है। प्रजा को प्रसन्न रखना इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं का परम धर्म माना गया है। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में राम क्या करते। इस तरह बाते बतलाकर गंगा पृथ्वी को समझाती हैं।

भवभूति उत्तर रामचरित में अनेक मार्मिक प्रसंगों के वर्णन के लिए कुछ स्थल विशेष उल्लेखनीय है। जैसा कि प्रथम अंक में चित्रदर्शन का वर्णन आता है। चित्रदर्शन में चित्रवीथी का दृश्य भवभूति की मौलिक कल्पना है। लक्ष्मण खिन्न सीता के मनोविनादार्थ राम और सीता को चित्रवीथी में राम चरित से सम्बद्ध चित्रों को देखने के लिए ले जाते हैं। इस चित्रवीथी में सीता की अग्नि शुद्धि तक के चित्र हैं। जृम्भक अस्त्रों के चित्रों को देखकर राम सीता को वर देते हैं कि ये जृम्भक अस्त्र तुम्हारे सन्तान को जन्मसिद्ध प्राप्त होंगे। इसके द्वारा वे राम–सीता के पारस्परिक अगाध प्रेम को प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार द्वितीय अंक में दण्डकवन का वर्णन है। राम शम्बूक को ढूँढते हुए दण्डकारण्य में जाते हैं। शम्बूक दिव्यपुरुष का रूप धारण करके राम के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। शम्बूक राम को बताता है कि यह दण्डक वन है। यहीं राम को पूर्व घटनाओं का स्मरण होता है और विलाप करते हैं। इसके द्वारा राम सीता के मिलन के लिए भूमिका तैयार करता है। जिससे राम परिचित स्थानों को देखकर बार–बार सीता को स्मरण करते हैं।

तृतीय अंक में छाया दृश्य का वर्णन मिलता है। राम पंचवटी में जब प्रवेश करते हैं तो वे अपने पूर्व परिचित स्थानों को देखकर मूर्छित हो जाते हैं। तब सीता अपने हस्त स्पर्श से राम को होश में लाती हैं। राम सीता के प्रति अपने मार्मिक उद्‌गार को प्रकट करते हैं। सीता भी अदृश्य रहते हुए राम के हार्दिक भावों से परिचित होती हैं। तमसा के कहने पर सीता अपने हस्तस्पर्श से मूर्छित राम को होश में लाती हैं। वासन्ती सीता परित्याग के लिए राम की निन्दा करती है। और सीता परित्याग को अपयश का कारण बताते हुए कहती हैं कि–

अयि कठोर! यशरू किल ते प्रियं....

इस प्रकार दोनों के हृदय से कटुता समाप्त हो गयी है। और दोनों को पनर्मिलन के लिए उद्यत दिखाया गया है। क्योंकि दोनों शोक के कारण मूर्छित होते हैं। इसी प्रकार चतुर्थ अंक में लव का वर्णन तथा पंचम अंक में लव और चन्द्रकेतु के विवादों का वर्णन आदि मिलता है। जिसके कारण नाटक दुःखान्त होते–होते सप्तम अंक सुखान्त हो जाता

उत्तररामचरित के रस के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद था कि इसमें अंगी रस कौन सा है। कोई विपलभ नामक श्रृंगार रस मानते हैं। तो कोई करुण रस मानते हैं। परन्त उस नाटक में विपलभ नामक श्रृंगार रस मानना भवभूति

के आत्मा के साथ विद्रोह है।

क्योकि भवभूति स्पष्ट रूप से करुण रस प्रधान इस नाटक को मानते हैं। इनता ही नहीं करुण रस को अन्य रसों का आधार भूत रस मानते हैं अर्थात करुण रस ही रूपान्तरित होकर अंगार, वीर आदि रसों के रूप में परिणत होता है। उनके मतों में सभी रसों की आत्मा के रूप में करुण रस है। अतः करुण रस प्रकृति है और शृंगार आदि रस उसकी विकृति है।

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्

भिन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।

आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयान्विकारा

नम्भो यथा सलिलमेव हि तत् समस्तम्।।

चूँकि भवभूति इस नाटक में करुण रस मानते हैं। जिसका स्थायी भाव शोक है। जैसा कि स्पष्ट है कि सीता परित्याग करते ही राम को सारा संसार सूना वन सा दिखायी पड़ने लगा है। संसार असार प्रतीत होता है। जीवन निष्फल दिखायी देता है। शरीर की चेतना समाप्त होने लगती है। राम अपने आपको असहाय अनुभव करते हैं। जिसके कारण राम के ह्रदय में घोर वेदना है। और उनका शोक पुटपाक के सदृश हो गया है।

अनिर्भिन्नो गम्भीरत्वादन्तर्गुढघनव्यथः।

पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः॥

सीता परित्याग के कारण राम से लेकर कौशल्या अरुन्धती आदि भी अत्यन्त दुःखी है। क्योंकि प्रिय जन से उत्पन्न वियोग अत्यन्त असहय्य होता है। वियोग के कारण सीता की दशा अवर्णनीय हो जाती है। वह अत्यन्त पीत वर्ण वाली हो गयी है। उसका मुख सूख गया है उसके श्रृंगार समाप्त हो गये हैं। मुँह पर बाल बिखरे पड़े हैं। वह अत्यन्त दयनीय हो गयी है। जिसके कारण सीता शोक की साक्षात मर्ति हो गयी है। उसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो साक्षात् विरह व्यथा और दीर्घ कालीन शोक ने उसे ऐसा बना दी है। जैसा इससे प्रतीत होता है

परिपाण्डुदुर्बलकपोलसुन्दरं

दधती विलोलकबरीकमाननम्।

करूणस्य मूर्तिरथवा शरीरिणी

विरहव्यथेव वनमेति जानकी॥

इस प्रकार भवभूति के उत्तररामचरित में करूण रस की प्रधानता है और अन्य रस गौण हैं। ये करूण रस के वर्णन में अपनी असाधारण पटुता दिखाते है। करूण रस

वर्णन के साथ दर्शकों की नेत्र से अश्रुधारा बह चलती है। उनके वाणी में इतना रस और आकर्षण है कि शुष्क हदय व्यक्ति भी करूण रसमयी गाथा सुनकर भाव–विभोर हो जाता है। इस प्रकार भवभूति करूण रस के सम्राट माने जाते हैं।

महाकवि भवभूति ने अपने काव्य को विभिन्न अंलकारो से सजाया संजोया है। इनके काव्यों में अलकारों की सुन्दर

छटा देखने को मिलती है। इन्होंने यथोचित स्थानों पर यथोचित अलंकारों का प्रयोग करके उसकी स्वाभाविकता को नष्ट नहीं होने दिया है। वस्तुतः यह स्थिति कवि को अपनी कविता के प्रति अनुराग को दिखाती है। इन्होंने अलंकारों के बहुलता से काव्य को न ही बोझिल बनाया और न ही हार को पैरों में पहनाकर उसका अनुचित प्रयोग किया। बल्कि ये आवश्यकतानुसार अंलकारो का यथोचित स्थान पर प्रयोग किया परन्तु उपमा के प्रयोग में ये तो सिद्धहस्त माने जाते हैं। उत्तररामचरितम् मे उपमा का प्रयोग निम्नवत् हैं

हा हा धिक्! परगृहवासदूषणं

यद्वैदेह्याः प्रशमितमद्भुतैरुपायैः।

एतन्तप्पुनरपि दैवदुर्विपाका

दालर्क विषमिव सर्वतः प्रसक्तम्॥

विषैले कुत्ते के द्वारा काटे गये घाव को उपायों द्वारा ठीक किया जाता है। लेकिन अज्ञात रूप से उसका विष सारे शरीर में फैलता रहता है और कुछ समय पश्चात् उसका भयंकर परिणाम सामने आता है। उसी प्रकार सीता का परगृहवासदूषण अद्भुत उपायों द्वारा प्रशमित कर दिया गया था। परन्तु वह अज्ञात रूप से फैलता रहा और कालान्तर में उसका भयंकर परिणाम प्रकट हुआ। इस प्रकार भवभूति यथोचित स्थान पर यथोचित अलंकार का प्रयोग करते है।

भवभूति भाषा के धनी हैं। वे कभी–कभी एक पद के लिए पूरे वाक्य का प्रयोग करते हैं तो कहीं–कहीं पूरे वाक्यार्थ को एक ही पद में अभिव्यक्ति कर देते हैं। अतः अर्थगौरव भवभूति के काव्य में एक अन्य विशेषता है। क्योंकि जहाँ कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ की अभिव्यक्ति निकलती है। वही अर्थगौरव की स्थिति मानी जाती है। भवभति के अर्थगौरव के सम्बन्ध में डॉ. अयोध्या प्रसाद सिंह ने लिखा है कि ''भवभूति विदग्धता. पाण्डित्य एव आदर्शवाद तीनों मिलकर उनके अर्थगौरव की सष्टि करते हैं। ये तीनों अर्थगौरव के विशिष्ट तत्व माने जाते हैं। अर्थगौरव की विशिष्ट शक्ति से संगठित श्लोक निम्नवत् है

अन्तरूकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात् ।

आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते।

इस प्रकार कवि ने एक छोटे से वाक्य को अपूर्व–भावों से भरकर अर्थगाम्भीर्य दिखलाया है।

इस प्रकार भवभूति के नाटकों में तत्कालीन समाज का वास्तविक चित्रण विस्तृत रूप से दिखलायी पड़ता है। विश्वास की महिमा में, प्रेम की पवित्रता में, भाषा का गाम्भीर्य और स्वच्छ हृदय का माहात्म्य इत्यादि का उत्कृष्ट वर्णन उत्तररामचरित में दिखलाया गया है। जो तत्कालीन समाज में भी दिखलायी पड़ता है। इतना ही नही उत्तर रामचरित में भावों के गम्भीरता के साथ–साथ आदर्शरूपता भी देखने को मिलती है। इस प्रकार करुण रस के शिरोमणि भवभूति के काव्य उत्तररामचरित में पग–पग पर सौन्दर्य के तत्वों को देखा जा सकता है। इनके काव्य में आन्तरिक सौन्दर्य एवं बाह्य जगत् के सौन्दर्य तत्वों का मणिकांचन प्रयोग दिखाया गया है। जो सामाजिको को सौन्दर्य की रस–चर्वणा के शिखर तक पहुँचा देता है और वह इसी रसोद्रेक के कारण आमुक्तकण्ठ से अनायास ही कह उठता है कि भवभूति तो वास्तव में भव अर्थात् संसार के भूति अथवा श्रृंगार ही हैं।

*व्याख्याता
ज्योतिष शास्त्र
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय
नीम का थाना (सीकर) राजस्थान

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. उत्तररामचरित–तृतीय अंक श्लोक संख्या 27, व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी
2. उत्तररामचरित–चतुर्थ अंक श्लोक संख्या–11, व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी
3. उत्तररामचरित–द्वितीय अंक श्लोक संख्या–27, व्याख्याकार शिवबालक द्विवेदी
4. उत्तररामचरित–तृतीय अंक श्लोक संख्या–8, व्याख्याकार शिवबालक द्विवेदी
5. उत्तररामचरित–तृतीय अंक श्लोक संख्या–47. व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी
6. उत्तररामचरित–तृतीय अंक श्लोक संख्या–1, व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी
7. उत्तररामचरित–तृतीय अंक श्लोक संख्या–
8, व्याख्याकार कपिलदेव द्विवेदी
9. उत्तररामचरित–प्रथम अंक श्लोक संख्या–40, व्याख्याकार शिवबालक द्विवेदी
10. उत्तररामचरित–तृतीय अक श्लोक संख्या–17, व्याख्याकार शिवबालक द्विवेदी